राजस्थान की मिट्टी और संस्कृति को समर्पित हिंदी पत्रिका

# राजताज

राजस्थान के रंग, राजताज के संग

वर्ष 1 | अंक 3 | जुलाई-अगस्त 2025 | पृष्ठ संख्या 30
www.rajtaj.com

## मरुभाषा का उजास
## आज़ादी के बाद राजस्थानी साहित्य की नई चेतना

## लेफ्टिनेंट जनरल हणूत सिंह राठौड़

www.rajtaj.com

# राजताज

राजस्थान के रंग, राजताज के संग

वर्ष 1 | अंक 3| जुलाई-अगस्त 2025 | पृष्ठ संख्या 30

मूल्य - आपकी मुस्कान

---

**राजस्थान की मिटटी, संस्कृति एवं रोजमर्रा की ख़ूबसूरती को शब्दों में पिरोती साहित्यिक पत्रिका “राजताज” राजस्थान के उर्जावान शिक्षकों की अभिनव पहल है.**

## संपादक मंडल

### मुख्य संपादक

चूना राम चौधरी
(अध्यापक)
बाड़मेर, राजस्थान

### सह-संपादक

गिरधर राम
(कर्मठ अध्येता और लेखक)
बीकानेर, राजस्थान

### संपादकीय सहयोगी

गोविन्द सुवालका
(अध्यापक)
भीलवाडा, राजस्थान

देवीलाल जांगिड
(अध्यापक)
जैसलमेर, राजस्थान

पोकरा राम
(अध्यापक)
बालोतरा, राजस्थान

### प्रकाशन स्थल

“राजताज" शोभाला जेतमाल, चोहटन,
जिला-बाड़मेर, राजस्थान - 344702

### हमसे संपर्क करें

Email- admin@rajtaj.com
Whatsapp- +919001363510

# क्या आप “राजताज” नियमित प्राप्त करना चाहते है?

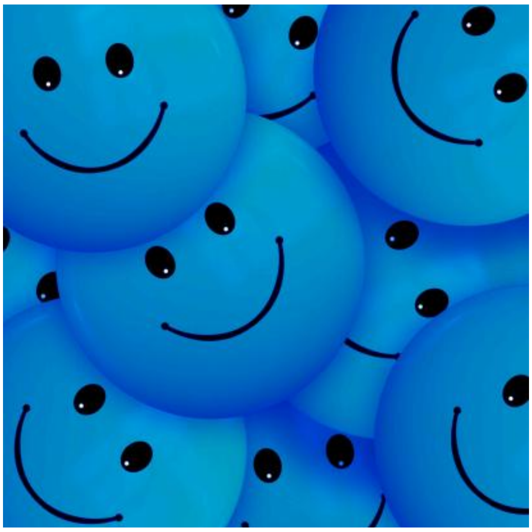

**मूल्य: आपकी मुस्कान**

सामने दिए गए सोशल मीडिया आइकन पर क्लिक करके आप हमसे जुड़ सकते है और नियमित पत्रिका घर बैठे अपने मोबाईल पर पा सकते है.

Whatsapp के आइकन पर क्लिक करने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जायेगा और नियमित पत्रिका भेजने के लिए आपका नंबर पंजीकृत हो जायेगा.

राजताज के टेलीग्राम चैनल से जुड़कर आप नियमित पत्रिका प्राप्त कर सकते है.

सामने दिए गए आइकन पर क्लिक करें और राजताज की वेबसाइट www.rajtaj.com पर विजिट करें.

ईमेल पर हमसे संपर्क करने के लिए सामने दिये गए आइकन पर क्लिक करें या admin@rajtaj.com पर मेल करें.

# इस अंक में


| | | | |
|---|---|---|---|
| सम्पादकीय | • सम्पादक की कलम से | | 5 |
| पाठक प्रतिक्रिया | • पाठकों की कलम से | | 6 |
| कवर स्टोरी | • मरुभाषा का उजास | चूना राम चौधरी | 7 |
| लोक रंग | • राजस्थानी नारी की सांस्कृतिक पहचान | देवीलाल जांगिड | 12 |
| गौरवशाली इतिहास | • लेफ्टिनेंट जनरल हणूत सिंह राठौड़ | गिरधर राम | 16<br>17 |
| संस्मरण | • "जब पहली बार ऊँट पर बैठा" | गोविन्द सुवालका | 21 |
| पधारो म्हारे देश | • उदयपुर का सफ़र | ठाकराराम जाखड़ | 23 |


राजताज पत्रिका में संग्रहित सम्पूर्ण सामग्री लेखकों की रचनात्मक प्रतिभा का परिणाम है. जिनमें उनके निजी विचार व्यक्त हुए है. हम उनकी विचार स्वतंत्रता का सम्मान करते है. उसमे संपादक मंडल की सहमती आवश्यक नहीं.


For more update visit our website:

www.rajtaj.com

राजताज की वेबसाइट पर जाने के लिए यहाँ क्लिक करें.

# संपादकीय

प्रिय पाठकों,
सप्रेम वंदन।

साहित्य, संस्कृति और संवेदना की हमारी इस यात्रा में एक और पड़ाव पर हम आपके साथ हैं। हर्ष मिश्रित गर्व के साथ हम प्रस्तुत कर रहे हैं आपकी अपनी ई-मैगज़ीन का *तृतीय अंक* — एक और कड़ी, जो आपके स्नेह, सुझाव और सहभागिता की बुनियाद पर निर्मित है।

हमारे पिछले दोनों अंकों को जिस स्नेह और सराहना की वर्षा मिली, उसने हमारी लेखनी को नई धार, और हमारी सोच को नई दिशा दी। हर टिप्पणी, हर सुझाव, हर साझा किया गया अनुभव हमारे लिए दीपक की तरह रहा — जो आगे बढ़ने की राह दिखाता रहा।

हमारी यह ई-मैगज़ीन अब एक परिवार बन चुकी है, जिसमें हर पाठक, हर लेखक, हर कलाकार की सहभागिता इसे जीवंत बनाती है। अपने विचारों, अनुभवों और रचनात्मकता से इस मंच को और भी समृद्ध करें। आपकी कलम की स्याही से यह पृष्ठ और भी रोशन होंगे क्योंकि जब हम साथ लिखते हैं, साथ सोचते हैं, तब एक *साहित्यिक समाज* आकार लेता है।

आपके विश्वास, आपके शब्दों, और आपके साथ के लिए हम आभारी हैं।
शब्दों और सपनों की इस यात्रा में, आप हमारे साथ हैं—यही सबसे बड़ा सौभाग्य है।
सप्रेम,
– आपका संपादक मंडल

# पाठक-प्रतिक्रिया

“राजताज पत्रिका एक बहुत ही सुंदर पहल है। हर लेख में संवेदना, विचार और संस्कृति की गहराई झलकती है। पिछले अंक में 'हस्तकलाएं: रेत में छुपे हुनर के मोती' वाला लेख पढ़कर मन पूरी तरह मंत्रमुग्ध हो गया। आपने जिस बारीकी से राजस्थान की हस्त-कलाओं जैसे मिट्टी के खिलौनों, लाख की चूड़ियों और कशीदाकारी के स्वरूप को शब्दों में पिरोया है, वह अद्भुत है।"
— भवानी दान चारण, जैसलमेर

"जब मैंने इस अंक में 'पन्नाधाय: बलिदान और मातृभूमि के प्रति निष्ठा' वाला लेख पढ़ा, तो मन गर्व से भर गया। पन्नाधाय जैसी वीरांगना की कहानी पढ़कर मेरी आँखें भीग गईं और दिल से यही निकला कि हमारी धरती पर ऐसे बलिदानी जन्म लेते हैं, तभी हमारी संस्कृति आज तक जीवित है। ये लेख सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं, महसूस करने के लिए हैं। आज की नई पीढ़ी अपने इतिहास और महान विरासत से धीरे-धीरे दूर होती जा रही है, लेकिन आपकी यह पत्रिका सच में एक पुल का काम कर रही है – जो अतीत को वर्तमान से जोड़ती है।"
— शकुंतला मिश्रा, शिक्षिका, जोधपुर

## आपकी राय, हमारी ताकत!

प्रिय पाठकों,आपकी सहभागिता और सुझाव हमारी ई-मैगज़ीन को और बेहतर बनाने की प्रेरणा देते हैं. हम आपके विचारों, समीक्षाओं और सुझावों का स्वागत करते हैं. आपका हर एक शब्द हमें न केवल प्रोत्साहित करेगा, बल्कि हमारी सामग्री को और समृद्ध बनाएगा.

“पाठक प्रतिक्रिया” स्तंभ में आप अपने अनुभव साझा कर सकते हैं, हमारे लेखों पर अपनी राय दे सकते हैं, और उन विषयों का सुझाव दे सकते हैं जिन्हें आप पढ़ना चाहते हैं. तो देर किस बात की? सामने दिए गए whatsapp के आइकन पर क्लिक करें और अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें भेजें और इस यात्रा का एक अहम हिस्सा बनें!

# मरुभाषा का उजास

## आज़ादी के बाद राजस्थानी साहित्य की नई चेतना

कवर स्टोरी

--लेख--

**चूना राम चौधरी**
**(अध्यापक)**
**बाड़मेर, राजस्थान**

राजस्थानी भाषा, राजस्थान की माटी की सोंधी खुशबू और वहाँ की सांस्कृतिक विरासत की जीवंत प्रतीक है। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि पीढ़ियों की स्मृति, संघर्ष, गौरव और आत्मीयता का संवाहक रही है। थार के तपते रेगिस्तान से लेकर अरावली की घाटियों तक, इस भाषा ने न केवल जनजीवन को स्वर दिया है, बल्कि लोकगीतों, लोककथाओं, कहावतों, और गाथाओं के माध्यम से समाज की चेतना को पोषित किया है। भारत की आज़ादी के बाद देशभर में भाषाई चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता को लेकर एक नई सोच विकसित हुई। इसी क्रम में राजस्थानी भाषा ने भी साहित्य के क्षेत्र में नई चेतना के साथ कदम बढ़ाया। जहाँ पहले यह भाषा लोकगीतों, गाथाओं और कथाओं तक सीमित थी, वहीं आज़ादी के बाद यह कहानी, कविता, नाटक, आलोचना और शोध के आधुनिक स्वरूपों में भी सशक्त रूप से उभरी।

इस नवजागरण का श्रेय उन समर्पित साहित्यकारों को जाता है जिन्होंने राजस्थानी भाषा को केवल बोलचाल की भाषा से ऊपर उठाकर साहित्यिक पहचान दिलाई। उन्होंने राजस्थानी जनजीवन की सच्चाई को, उसकी खुशियों और संघर्षों को, उसकी परंपराओं और सामाजिक विडंबनाओं को बड़े ही स्वाभाविक और प्रभावी ढंग से शब्दों में ढाला। चाहे वह थार के किसान की व्यथा हो, किसी राजपूत वीर की गाथा हो, अथवा एक साधारण स्त्री की संवेदनाएं – हर विषय को राजस्थानी भाषा में इस प्रकार गूंथा गया कि पाठक उस जीवन को महसूस कर सके। इन रचनाकारों की लेखनी ने भाषा को जनमानस से जोड़ा और उसे राष्ट्रीय पटल पर पहचान दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

आज राजस्थानी साहित्य न केवल समृद्ध है, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी उसका मान बढ़ा है। इस लेखमाला में हम ऐसे ही प्रमुख साहित्यकारों के जीवन, कृतित्व और योगदान पर प्रकाश डालेंगे, जिन्होंने आज़ादी के बाद राजस्थानी भाषा को गौरव की ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

# विजयदान देथा – लोककथा को आधुनिक साहित्य का स्वर देने वाले कथाकार

विजयदान देथा, जिन्हें प्रेमपूर्वक 'बिज्जी' कहा जाता है, राजस्थानी साहित्य के ऐसे महान कथाकार रहे हैं जिन्होंने लोककथाओं की परंपरा को आधुनिक साहित्य के स्वरूप में ढालकर वैश्विक मंच पर पहुँचाया। उनका जन्म 1 सितंबर 1926 को राजस्थान के बोरुंदा गाँव (जोधपुर ज़िला) में हुआ था। वे न केवल राजस्थानी भाषा के गौरव रहे, बल्कि भारतीय साहित्य में भी उनका योगदान अनमोल माना जाता है।

बिज्जी एक साधारण ग्रामीण परिवेश में जन्मे थे, लेकिन उनकी सोच असाधारण थी। उन्होंने औपचारिक शिक्षा पूरी करने के बाद पूरी तरह से साहित्य को समर्पित कर दिया। उन्होंने तय कर लिया था कि वे केवल राजस्थानी भाषा में ही लिखेंगे, चाहे इससे उनकी पाठक संख्या सीमित हो जाए। यह निर्णय उनकी मातृभाषा के प्रति गहरी निष्ठा को दर्शाता है। राजस्थान की परंपरागत कहावतों, लोकगीतों और किंवदंतियों को संजोते हुए विजयदान देथा ने उन्हें नए रूप में प्रस्तुत किया। वे कहा करते थे, “मैंने लोककथाओं को नहीं गढ़ा, लोककथाओं ने मुझे गढ़ा है।” यही कारण था कि उनका साहित्य कृत्रिमता से मुक्त था, उसमें लोकजीवन की सहजता और जीवन की सच्चाई थी।

## प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ

- बाताँ री फुलवारी, भाग 1-14
- प्रेरणा (कोमल कोठारी द्वारा सह-सम्पादित)
- सोरठा
- टिडो राव
- उलझन
- अलेखुन हिटलर
- कबू रानी

2007 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित विजयदान देथा को 2011 के साहित्य नोबेल पुरस्कार के लिए भी नामांकित किया गया था हालांकि बाद में यह अवॉर्ड टॉमस ट्रांसट्रॉमर को दिया गया। उनकी राजस्थानी भाषा में चौदह खडों में प्रकाशित बाताँ री फुलवारी के दसवें खण्ड को भारतीय राष्ट्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया, जो राजस्थानी कृति पर पहला पुरस्कार है। इसके अतिरिक्त उन्हें मरूधरा पुरस्कार तथा भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

# कन्हैयालाल सेठिया: राजस्थान का साहित्यिक सूरज

कन्हैयालाल सेठिया का जन्म 11 सितंबर 1919 को चुरू जिले के सुजानगढ़ कस्बे में हुआ। राजस्थान की इस मिट्टी में उनके व्यक्तित्व के हर पहलू की बुनियाद रखी गई। वे बचपन से ही प्रकृति के करीब रहे और रेगिस्तान की हर धड़कन को अपनी रूह में समेटते गए। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी राजस्थान के इसी सांस्कृतिक परिवेश में हुई, जिससे उन्होंने अपने लेखन में गहरी लोक-संवेदना और मानवीय जज़्बात को जगह दी।

कन्हैयालाल सेठिया की कविताओं में विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला देखने को मिलती है। उनकी कविताएँ मानो एक सजदा हैं राजस्थान की मिट्टी, मरुभूमि, किसानों, और वहाँ की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति। वहीं, उनकी कविताएँ सामाजिक समस्याओं, राजनीति, और स्वतंत्रता संग्राम जैसे मुद्दों पर भी गहरी चोट करती हैं।

## कन्हैयालाल सेठिया की राजस्थानी कृतियाँ

- रमणियां रा सोरठा
- गळगचिया
- मींझर
- कूंकंऊ
- लीलटांस
- धर कूंचा धर मंजळां
- मायड़ रो हेलो
- सबद
- सतवाणी
- अघरीकाळ
- दीठ
- कक्को कोड रो
- लीकलकोळिया
- हेमाणी

# मणि मधुकर

राजस्थानी साहित्य को नई ऊँचाइयाँ देने वाले यशस्वी साहित्यकारों में मणि मधुकर का नाम अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। वे एक कवि, नाटककार, आलोचक और संपादक के रूप में राजस्थानी भाषा की सेवा में जीवनपर्यंत समर्पित रहे। उनके साहित्य में लोकचेतना, सामाजिक न्याय, विद्रोह और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। इनका मूल नाम मनीराम शर्मा है। इनके द्वारा रचित एक कविता संग्रह 'पगफेरौ' के लिये उन्हें सन 1975 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

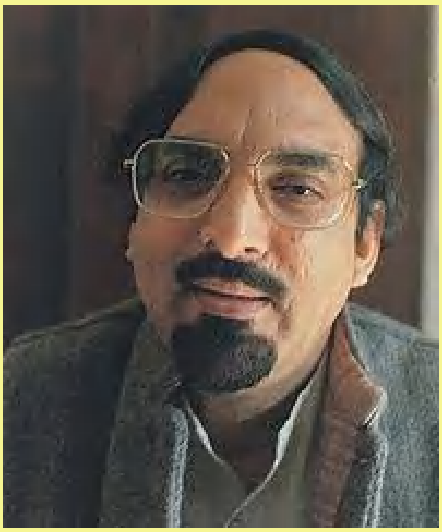

# चंद्रप्रकाश देवल

चन्द्रप्रकाश देवल, जिन्होंने राजस्थानी भाषा को न केवल वैश्विक साहित्य की ऊंचाइयों तक पहुँचाया, बल्कि उसकी आत्मा में समाए लोक, पीड़ा, संघर्ष और सौंदर्य को भी मुखर किया। वे कवि हैं, अनुवादक हैं, संपादक हैं और सबसे बढ़कर – एक सजग भाषाकर्मी हैं, जिन्होंने शब्दों को मात्र साहित्य नहीं, बल्कि संस्कृति की संचित चेतना मानकर साधा है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'कावड़','मान','तोपनामा','पक्षतावा','मृत्यु किसी को डराती नहीं', 'मृत्यु से मत भागो', 'विपथगा'। उन्हें सन् 2011 में भारत सरकार ने भारत के चतुर्थ सर्वोच्च नागरीक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया। इनके द्वारा रचित एक कविता–संग्रह पागी के लिये उन्हें सन् 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार (राजस्थानी) से सम्मानित किया गया। उन्हें राजस्थानी साहित्य की सेवा करने और कविता "झुरावो" के लिए 2006 में मातृश्री कमल गोयनका राजस्थानी साहित्य सम्मान मिला। उन्हें अपनी कृति 'उदीक पुराण' के लिए सूर्यमल मिश्रण शिखर पुरस्कार (2004-05) प्रदान किया गया था

# सत्यप्रकाश जोशी

सत्यप्रकाश जोशी (20 मार्च 1926 – 26 अप्रैल 1990), जोधपुर के प्रतिष्ठित राजस्थानी कवि-संपादक और आधुनिक चेतना के प्रवर्तक थे। उन्होंने जसवंत कॉलेज से एम. ए. की पढ़ाई की और मुंबई में हिंदी-अभिनेता शिक्षण के साथ ही कविता की शुरुआत की । उनकी कविताएँ जैसे 'बोल भारमली', 'दीवा कांपै क्यूं', 'राधा', 'गांगेय', 'आगत-अणागत' इत्यादि, राजस्थानी कविता में सामाजिक, नारी और ऐतिहासिक विविध विषयों को समृद्ध रूप से अभिव्यक्त करती हैं । उन्हें 'बोल भारमली' काव्य-ग्रंथ के लिए केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला है । सत्यप्रकाश जोशी ने राजस्थानी साहित्य को न केवल भाषा की आधुनिकता दी, बल्कि डिंगल परंपरा में नए प्रयोग कर, उसे लोकसेवी की तरह मंचीय कवि के रूप में स्थापित किया। उनकी लेखनी में आधुनिक चिंतन, लोक संस्कृति और गहराईपूर्ण संवेदना का सहजीव रूप देखने को मिलता है ।

# नारायण सिंह भाटी

नारायण सिंह भाटी (7 अगस्त 1930 – 18 अप्रैल 1994), जोधपुर के मालूंगा गाँव के प्रतिष्ठित राजस्थानी साहित्यकार, कवि-संपादक, और डॉ. थे, जिन्होंने सन् 1955 में चौपासनी में राजस्थानी शोध संस्थान की स्थापना की। उनकी प्रमुख काव्य-कृतियों में बरसां रा डीगोड़ा डूंगर लांघिया, जीवण-धन, सांझ, मीरां, कलप आदि शामिल हैं, जिनमें स्वच्छन्दता और मुक्तछंद का विशेष प्रभाव दिखता है। उन्हें साहitya अकादमी ने 1981 में 'बरसां रा डीगोड़ा डूंगर लांघिया' पर पुरस्कृत किया, साथ ही उन्हें महाराणा कुंभा पुरस्कार, पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कार और साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित मोनोग्राफ से भी सम्मानित किया गया। भोजपुरी–राजस्थानी लोकधारा, डिंगल परंपरा और मुक्तछंद में उन्होंने नवप्रेमी शैली विकसित की, जिससे आधुनिक राजस्थानी कविता को नई पहचान मिली।

# यादवेंद्र शर्मा ‘चंद्र’

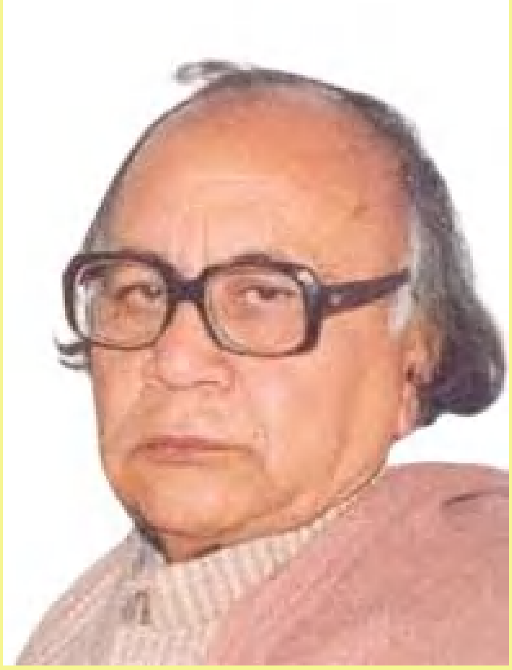

यादवेंद्र शर्मा ‘चंद्र’ बीकानेर के प्रतिष्ठित राजस्थानी एवं हिंदी साहित्यकार थे, जिन्होंने कथा, उपन्यास, नाटक और बालसाहित्य सहित 200 से अधिक रचनाएँ लिखीं, जिनमें समंद अर थार, जमारो, चांदा सेठाणी प्रमुख हैं । उन्होंने राजस्थानी कथा-साहित्य के क्षेत्र में नवप्रवर्तन किए एवं हिन्दी माध्यम में राजस्थानी जीवन और संस्कृति को प्रभावशाली रूप से समृद्ध किया । उनकी कृति समंद अर थार को साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया, और ‘लाज राखो राणी सती’ जैसी राजस्थानी फिल्म के पटकथा लेखक के रूप में भी वे प्रसिद्ध हैं । सरल, जन-सांस्कृतिक और सामाजिक सत्य को अपनी लेखनी में उतारने वाले वे आज भी राजस्थान में प्रेरक साहित्यिक व्यक्तित्व माने जाते हैं ।

# रेवतदान चारण ‘कल्पित’

रेवतदान चारण ‘कल्पित’ (5 अप्रैल 1924–17 जून 1997) जोधपुर ज़िले के मथाणिया गाँव में जन्मे एक प्रख्यात राजस्थानी कवि, समाजसुधारक एवं जन–नेता थे, जिन्होने डिंगल और आधुनिक मुक्तछंदों में क्रांतिकारी चेतना और समाजवाद का ओजपूर्ण मिश्रण प्रस्तुत किया । स्वतंत्रता आंदोलन (1939–47) में भी सक्रिय रहे, उन्होंने सामाजिक अन्याय, किसान-मज़दूरों की दुर्दशा और सामंती शोषण के विरुद्ध अपनी कलम का अभिन्न उपयोग किया । उनकी प्रमुख कृतियों में ‘धरती रा गीत’, ‘चेत मांनखा’, ‘उछाळौ’, ‘इंकलाब री आंधी’ आदि हैं, जिनमें ‘उछाळौ’ को 1990 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल चुका है । इसके अलावा उन्हें राजस्थान साहित्य अकादमी, नव चेतना (सिरोही), राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति अकादमी समेत कई प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा भी सम्मानित किया गया ।

# डॉ. अर्जुन देव चारण

डॉ. अर्जुन देव चारण (जन्म: 10 मई 1954, मथाणिया, जोधपुर) आधुनिक राजस्थानी साहित्य के प्रतिष्ठित कवि, नाटककार, आलोचक और रंग-निर्देशक हैं, जिनकी लेखनी में समाज की गहरी संवेदनाओं और समकालीन समस्याओं का प्रगतिशील चित्र मिलता है । वे डॉ. रेवतदान चारण ‘कल्पित’ के सुपुत्र हैं और डिंगल तथा मुक्तछंद परंपरा के उन्नायक माने जाते हैं । उनकी प्रमुख कृतियों में धरमजुद्ध, रिंधरोही, मुगती गाथा, घर तौ एक नाम है भरोसै रौ आदि शामिल हैं, जिनमें ‘धरमजुद्ध’ के लिए उन्हें 1992 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और ‘घर तौ एक नाम है भरोसै रौ’ संग्रह के लिये 2011 में बिहारी पुरस्कार से नवाजा गया । इसके अतिरिक्त वे जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में राजस्थानी विभाग के अध्यक्ष, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के प्रमुख एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के उपाध्यक्ष भी रहे, जिनके रंगमंच-विश्लेषण और नाट्य-निर्देशन ने राजस्थानी थियेटर में नए आयाम स्थापित किए ।

लोक रंग

# राजस्थानी नारी की सांस्कृतिक पहचान

## मर्यादा, परंपरा और आत्मबल की जीती-जागती मिसाल

--लेख--

देवीलाल जांगिड
(अध्यापक)
जैसलमेर, राजस्थान

राजस्थान की धरा, जहां रेत के समंदर लहराते हैं, वहीं इसी रेत पर पदचिन्ह छोड़ती हुई एक स्त्री चलती है – सिर पर घूँघट, पाँव में पायल, और हृदय में धैर्य, त्याग, और आत्मगौरव। इस स्त्री को हम 'राजस्थानी नारी' कहते हैं। वह केवल एक सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा और आदर्शों की सजीव मूर्ति है।
यह लेख राजस्थानी नारी की सांस्कृतिक पहचान, उसकी भूमिका, संघर्ष, सौंदर्य, आस्था, कला, वेशभूषा और उसकी चेतना के अनेक रंगों को उजागर करता है।

## संस्कारों की पालिका, संस्कृति की वाहिका

राजस्थानी नारी जन्म से ही एक ऐसी धारा में बहती है जहाँ हर मोड़ पर परंपराओं की बयार बहती है। वह बचपन से ही माँ, दादी, चाची जैसी महिलाओं के सान्निध्य में जीवन के उन गूढ़ संस्कारों को आत्मसात करती है जो पीढ़ियों से बहते आए हैं। बाल्यकाल में वह लोरियों से संस्कृति सीखती है, विवाह के बाद उसी संस्कृति को संजोती है और वृद्धावस्था में उसे आने वाली पीढ़ी को सौंप देती है। वह त्यौहारों, रीति-रिवाज़ों, गीतों और लोककथाओं के माध्यम से परिवार और समाज को जोड़ती है। उसकी संस्कृति उसके जीवन का पर्याय होती है, जिसमें मर्यादा, स्नेह और त्याग रचा-बसा होता है।

## लोकनृत्य और गायन में समाई आत्मा की आवाज़

राजस्थानी नारी की पहचान उसके लोकसंगीत और नृत्य से भी जुड़ी है। तेरह ताली, चरी, गवरी जैसे लोकनृत्य केवल कला का प्रदर्शन नहीं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और भावनात्मक संदेशों का माध्यम होते हैं। वह जब लोकगीत गाती है, तो उसमें जीवन की पीड़ा, प्रेम, विरह और आस्था की छवि झलकती है। गीतों के माध्यम से वह न केवल अपने भावों को व्यक्त करती है, बल्कि समाज को एकजुट करती है। उसका गायन आत्मा की आवाज़ बनकर सुनने वाले के मन को स्पर्श करता है।

## वेशभूषा: रंगों और गरिमा का समन्वय

राजस्थानी नारी की पोशाक उसकी संस्कृति की पहचान है। उसकी वेशभूषा में न केवल सुंदरता है, बल्कि उसमें सामाजिक मर्यादा, पारिवारिक स्थिति और पारंपरिक अनुशासन भी समाहित होता है। घाघरा, चोली और ओढ़नी का संयोजन केवल कपड़ों का मेल नहीं, बल्कि एक विचारधारा का प्रतिबिंब है। रंग-बिरंगे वस्त्रों में छिपी उसकी भावनाएं, सौंदर्यबोध और गरिमा उसकी आत्मा को भी सजाती है। हर रंग का अपना प्रतीक होता है — लाल प्रेम और शक्ति का, पीला शुभता का, हरा समृद्धि का। लहरिया, बांधनी, गोटा-पट्टी जैसे डिज़ाइन उसकी कलात्मक रुचि और शिल्पीय बोध का परिचायक होते हैं।

## आस्था और श्रद्धा में डूबी जीवनशैली

राजस्थानी नारी की दिनचर्या आस्था से शुरू होती है और विश्वास पर समाप्त होती है। प्रातःकाल की तुलसी पूजा से लेकर रात्रि के दीपदान तक, उसका हर कार्य ईश्वर के प्रति समर्पण से प्रेरित होता है। चाहे वह तेजा दशमी का उपवास हो या गणगौर की पूजा, वह इन अवसरों को हृदय से अपनाती है। वह केवल स्वयं के लिए नहीं, बल्कि पूरे परिवार के स्वास्थ्य, समृद्धि और दीर्घायु के लिए व्रत रखती है। उसकी श्रद्धा में दिखावा नहीं, बल्कि निष्ठा होती है। लोकदेवता जैसे रामदेवजी,

भैरूजी, देवनारायण जी आदि में उसकी आस्था अद्भुत होती है, जो उसे हर संकट में संबल प्रदान करती है।

## कला, शिल्प और गृह सज्जा में दक्षता

राजस्थानी नारी का हाथ जितना कोमल है, उतना ही सृजनशील भी। वह मिट्टी के बर्तनों को सजाकर उनमें जीवन भर देती है। घर की दीवारों पर बनाए गए मांडणे उसकी कला की जीवंत अभिव्यक्ति होते हैं। वह पुराने कपड़ों से सुंदर रजाई बना लेती है, सीपियों और कांच के टुकड़ों से गृह सज्जा करती है। रंगों और आकारों के माध्यम से वह एक ऐसा संसार रचती है जो सौंदर्य, संतुलन और संस्कृति का संगम होता है। उसके हाथों की कढ़ाई में भावनाएँ होती हैं, और उसकी रचनाओं में जीवन का संगीत। उसकी कला, न केवल सजावट है, बल्कि आत्मा की भाषा है।

## बलिदान और वीरता की जीवंत मिसाल

राजस्थानी नारी के भीतर एक ऐसी लौ जलती है जो समय आने पर ज्वाला बन जाती है। वह न केवल प्रेम और त्याग की देवी है, बल्कि संकट में पराक्रम और बलिदान की मूर्ति भी है। पन्नाधाय जैसी माताएं अपने पुत्र को बलिदान कर राजवंश की रक्षा करती हैं। पद्मिनी जैसी रानियाँ अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए जौहर की ज्वाला में प्रवेश करती हैं। ये घटनाएँ केवल इतिहास नहीं, बल्कि आत्मबल की प्रेरक कथाएं हैं। आज भी राजस्थानी महिलाएं परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए त्याग करने से पीछे नहीं हटतीं। उनकी वीरता मौन होती है, लेकिन उसकी गूंज सदियों तक रहती है।

## घर की धुरी: स्वावलंबन और परिश्रम की मिसाल

राजस्थानी नारी का जीवन परिश्रम की मिसाल है। वह सुबह सबसे पहले उठती है, घर को सजाती है, चूल्हा जलाती है और परिवार की हर ज़रूरत को बिना कहे समझती है। गाँवों में वह खेतों में काम करती है, पशुपालन करती है और साथ ही घर की व्यवस्था भी संभालती है। गर्मी हो या सर्दी, वह अपनी जिम्मेदारियों से पीछे नहीं हटती। नई तकनीक आने के बावजूद वह अपने पारंपरिक कामों में दक्ष बनी रहती है। साथ ही, आज की नारी स्वरोजगार और समूह योजनाओं से जुड़कर आत्मनिर्भर बन रही है। वह परिवार की रीढ़ है, जो बिना थके सबको थामे रहती है।

## नारी शिक्षा और सामाजिक बदलाव की ओर बढ़ते कदम

समय के साथ-साथ राजस्थानी नारी ने शिक्षा की ओर भी कदम बढ़ाए हैं। पहले जहाँ बालिकाओं को पढ़ने से रोका जाता था, आज वही बेटियाँ स्कूल और कॉलेज तक पहुँच रही हैं। सरकार की योजनाओं और समाज की बदलती सोच ने नारी को नई दिशा दी है। अब वह केवल घर की रानी नहीं, बल्कि ज्ञान की ज्योति भी है। वह शिक्षक, डॉक्टर, अफसर और व्यवसायी बनकर समाज की सेवा कर रही है। शिक्षा ने उसमें आत्मविश्वास जगाया है और उसे निर्णय लेने की शक्ति दी है। यह बदलाव उसकी संस्कृति को आधुनिकता से जोड़ने का एक सुनहरा पुल बन चुका है।

## आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन

राजस्थानी नारी आज मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया से जुड़ी है, लेकिन उसने अपनी जड़ों को नहीं छोड़ा। वह एक ओर मॉडर्न फैशन अपनाती है, दूसरी ओर तीज-त्योहार पर पारंपरिक पहनावे में सजती है। उसके भीतर एक ऐसा संतुलन है जो उसे आधुनिक सोच और पारंपरिक मूल्यों के बीच सामंजस्य बिठाना सिखाता है। वह बच्चों को अंग्रेज़ी पढ़ाती है, लेकिन रात को लोककथाएं भी सुनाती है। यही उसकी सबसे बड़ी विशेषता है – वह समय के साथ चलती है, लेकिन अपनी संस्कृति को पीछे नहीं छोड़ती। वह नए युग की दूत है, पर जड़ों की संरक्षिका भी।

## अस्तित्व की पुकार: सम्मान और समानता की ओर

आज का समाज राजस्थानी नारी की शक्ति, बुद्धिमत्ता और सहनशीलता को स्वीकारने लगा है, लेकिन अभी भी बहुत सी चुनौतियाँ बाकी हैं। उसे केवल रीति-रिवाज़ों की रखवाली के रूप में नहीं, बल्कि एक निर्णयकर्ता और समाज की भागीदार के रूप में देखा जाना चाहिए। उसकी भूमिका को केवल घरेलू तक सीमित करना अनुचित है। शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक निर्णयों में उसकी उपस्थिति ज़रूरी है। जब उसे पूरा सम्मान और अवसर मिलेगा, तभी वह अपने संपूर्ण सामर्थ्य के साथ उभर पाएगी। उसकी संस्कृति तभी पूर्ण होगी, जब उसके अस्तित्व को भी सम्मान मिलेगा।

राजस्थानी नारी, जिस परंपरा की छांव में पली, उसने उसे अपनी पहचान का गहना बना लिया। उसकी सादगी में सौंदर्य है, उसकी वाणी में मिठास है, और उसकी आत्मा में आग है – संस्कारों की, स्वाभिमान की, और सृजन की।


**अगर आप अपने शब्दों के मोती “राजताज” की माला में पिरोना चाहते है तो संपर्क करें**

“राजताज" हेतु आप भी रचनाएँ भेज सकते है. आलेख, समीक्षा, इतिहास, कला, विज्ञान, रोजगार, धरोहर, साक्षात्कार, शोध परक लेख, यात्रा वृतांत, लोक साहित्य, कविता, गीत, गजल, किस्सा-कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, पुस्तक-समीक्षा आदि साहित्य की सभी विधाओं में रचनाओं का स्वागत है.

आपकी रचना मौलिक और अप्रकाशित है. इस बात का उल्लेख किया जाना चाहिए. रचनाएँ अपना नाम, पता, तस्वीर और परिचय सहित admin@rajtaj.com पर ई-मेल भेजें. आपके लेख वेबसाइट पर भी प्रकाशित किये जायेंगे.

हम ऐसी रचनाओं की स्वीकार नहीं करते है जो समाज की भावनाओं को ठेस पहुंचाती हों, किसी वर्ग या किसी विशेष समुदाय, किसी राजनीतिक पार्टी के समर्थन या आलोचना से ग्रस्त हो.

# लेफ्टिनेंट जनरल हणूत सिंह राठौड़

गौरवशाली इतिहास

--लेख--

**गिरधर राम**
**बीकानेर, राजस्थान**

इतिहास के पन्नों में कुछ ऐसे नाम दर्ज हैं जो कभी धुंधले नहीं पड़ते। ये वे नाम हैं, जिन्होंने अपने स्वार्थ, भावनाओं और निजी सुखों से ऊपर उठकर देश और समाज की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित किया। ऐसे ही भारत के वीर योद्धा मारवाड़ मुकुट मणि हणूतसिंह जी जसोल की गौरवगाथा इस लेख में पढेंगे।

जन्म - 6 जुलाई 1933 जसोल, जोधपुर राज्य, ब्रिटिश भारत

निधन - 10 अप्रैल 2015 (आयु 81)
देहरादून , उत्तराखंड , भारत

पिता - कर्नल अर्जुन सिंह जी (जोधपुर की रावण शाखा के रावल जोरावर सिंह जी के पुत्र)

माता - ठकुरनी श्रीमती किशनकँवर जी (आईदान सिंह जी सोढ़ा अमरकोट की पुत्री)

एक भारतीय जनरल ऑफिसर थे। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान बसंतर की लड़ाई में उनकी भूमिका के लिए उन्हें भारत के दूसरे सर्वोच्च सैन्य सम्मान महावीर चक्र से सम्मानित किया गया था।

शूरवीरों की मालानी धरा के जसोल घराने में रावल मल्लिनाथ के वंशज थे, उनका वंश राठौड़ो के वरिष्ठ शाखा महेचा राठौड़ है। रावल मूलराज जी के पौत्र और रावल जोरावरसिंह के पुत्र जोधपुर लान्सर्स में लेफ्टिनेंट कर्नल अर्जुनसिंह जी की ठकुरानी किशनकँवर जी (ठाकुर आइदानसिंह सोढा अमरकोट) की कोख से 6 जुलाई 1933 को एक तपतेज धारी सूर्य समान बालक का जन्म हुआ जिन्होंने भक्ति और शक्ति के बल से माँ भारती के मस्तिष्क पर अपना नाम अंकित किया जिन्हें ऋषि रणबंका राठौड़ लेफ्टिनेंट जनरल "हणूतसिंह जी जसोल" के नाम से जानते हैं।

बचपन से ही राजपूती परंपरा और देश धर्म की दीप्ति मर्यादाओं के सुसंस्कार हणूतसिंह जी के सहृदय में भरे हुए थे। प्रारंभिक शिक्षा के बाद आप देहरादून की कर्नल ब्राउन कैंब्रिज स्कूल से पढाई के दौरान आप सन 1949 में राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी(NDA) में भर्ती हो गए।

शूरवीरता के भाव, कठिन मेहनत, बहादुरी, ड्यूटी और ईमानदारी के कारण सन् 1953 ई. में लेफ्टीनेंट कमिशन पद पाकर आप देश के नामी आर्मी पलटन 17वीं पूना हॉर्स में तैनात हुए। देशभक्ति की देव नदी के साथ ईश्वर भक्त हणूतसिंह जी के हृदय में आध्यत्मिकता की अमृत तरंग अबाध गति से उमड़ने लगी और फौज की सतर्क ड्यूटी के पश्चात् विश्राम की वेला में आप श्री योग, ध्यान, माला आदि पूजा पाठ कर घंटों भर ध्यानमुद्रा में मग्न रहा करते थे।

भीष्मचरित कर्मयोगी हणूतसिंह जी अपने ब्रह्मचारी धर्म पर डटे रहे, काम वासना की तरंग कभी भी आपकी दृढ़ निश्चय में बाधा न बन सकी और आपका कुंदन रूप निखरता गया आप की भक्ति और साधना के बल पर काम वासना पर विजय और जवानी के जोश में देशभक्ति का जूनून चौगुना हो गया, उस अलमस्त उद्भट योद्धा और खेलते ऋषि को मातृभूमि की रक्षा के बिना कोई और नशा नहीं था। अपनी तपोनिष्ट जिन्दगी में पारस पत्थर हणूतसिंह जी को भोग, ऐश्वर्य, रईसी, लोभ, मोह आदि सांसारिक मायाजाल कभी भी छू तक न सके, माँ भारती के इस सपूत को सिर्फ एक नशा था, और वह था उसके अखंड देश और शस्य श्यामला मां भारती का। कंचन काया वाले छप्पन इंच के सीने पर वीरता के पदकधारी वीर, ओजस्वी चेहरा, बुलंद हौंसला, निर्भीक निर्णय आदि गुण आपके व्यक्तित्व की निशानियाँ थी।

सन् 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्धों में हणूतसिंह जी ने अदम्य साहस और बहादूरी से लड़ पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिए। सन् 1971 के समय तो हणूतसिंह जी ने एक ऐसा गौरवशाली इतिहास रचा जिसकी वाहवाही समूचे संसार में फैल गयी। हुआ यूं कि, देश की पश्चिमी दिशा में सक्करगढ़ सेक्टर में पाकिस्तानी फौज लड़ाई की नीयत से अपनी लगभग 60 टैंक खड़ी की और बसंतर नदी की तलहटी में छावनी बना पूरी नदी के आसपास लैंडमाइंस बिछा दी। इसका मतलब था कि बसंतर नदी पार करते वक्त भारत की टैंक लैंडमाइंस की वजह से बर्बाद हो जायगी, हिन्द सेना के अधिकारीयों ने यह जिम्मेदारी लेफ्टीनेंट हणूतसिंह जी को सौंपी।

हुआ यूं कि, देश की पश्चिमी दिशा में सक्करगढ़ सेक्टर में पाकिस्तानी फौज लड़ाई की नीयत से अपनी लगभग 60 टैंक खड़ी की और बसंतर नदी की तलहटी में छावनी बना पूरी नदी के आसपास लैंडमाइंस बिछा दी। इसका मतलब था कि बसंतर नदी पार करते वक्त भारत की टैंक लैंडमाइंस की वजह से बर्बाद हो जायगी, हिन्द सेना के अधिकारीयों ने यह जिम्मेदारी लेफ्टीनेंट हणूतसिंह जी को सौंपी।

इस युद्ध में हणूतसिंह जी की ब्रिगेड ने बसंतर नदी के आसपास मोर्चा संभाला लगातार दो दिन हुए इस युद्ध में हणूतसिंह जी के शूरवीरों ने पाक सेना की हालत खस्ता कर दी, आख़िरकार हणूतसिंह जी की कुशल युद्ध नीति, सशक्त नेतृत्व और होशियारी से भारत की टैंकों ने पाकिस्तानी सेना पर हमला बोल दिया हणूतसिंह जी के नेतृत्व में पाक सेना की 48 टैंक तबाह हो गयी और साक्षात् काल की तरह भारतीय सेना को उमड़ता देख पाक सेना के पैर कांप गए, पाक की 48 टैंक नेस्तानाबूद हो गयी और वैसे भी घर में पुदीना इतना ही था। इस युद्ध के कारण ही भारतीय सेना लाहौर को घेरने में सफल हुई थी जिससे 1971 की लड़ाई में भारत पाकिस्तान के सक्करगढ़ क्षेत्र में विजयी हुआ था। कई सिपाही मरवाकर, गोला बारूद गंवाकर, आखिरकार पाक ने 16 दिसंबर

1971 को सरेंडर कर दिया और पूर्वी पाकिस्तानियों के लिए बांग्लादेश बना। इस जीत से भारत ने हणूतसिंह जी को महावीर चक्र अर्पण कर उनकी वीरता को गौरवान्वित किया।

पाकिस्तान तो ऐसी सुदृढ़ सैनिक संरचना देख चौंक गया और जब उन्होंने अपनी हार की समीक्षा करवाई तो इस जंग में हणूतसिंह जी का नाम सामने आया। कहते है कि, घाव तो दुश्मन का भी सराहना चाहिए, सो पाक ने हिन्द के हीरे हणूतसिंह को "फख्र-ए-हिन्द" की पदवी दी। इस गौरवशाली जीत के पश्चात् आपश्री को कई कमिशन मिले और युद्धाभ्यास में कमान भी संभाली। आपका नाम देश के 12 नामी जनरलों में आता था। समर्पित देश सेवा के कारण आपको परम विशिष्ट सेवा मैडल (PVSM) भी मिला, 31 जुलाई 1991 जनरल हणूतसिंह जी 39 वर्ष की देशभक्ति कर सैन्य सेवा से निवृत हुए।

इसके पश्चात आपश्री ईश्वरभक्ति के अथाह सागर में उतर गए। विरह वैराग का बाण तो पहले से ही लगा हुआ था और अब योग, ध्यान, साधना, और समाधि के मार्ग से ऐसी धुन लगी कि कुंडलिनी जागरण जैसी क्रियाओं से आपका सीधा मिलन सच्चीदानंद से होने लगा। आप देहरादून में बालशिव योगीआश्रम से दीक्षा लेकर अजम्पा जाप और घोर तपस्या कर सिद्धियाँ पाई। आप श्री माँ बाला बापजी महाराज के परम भक्त थे और बापजी की सेवा में आते रहते थे। बापजी जनरल साब को अपना मानस पुत्र मानते थे।

हणूतसिंह जी के चचेरे भाई और साहित्य रतन ठाकुर श्री नाहरसिंह जी अपने जीवन की कई रोचक घटनाएं सुनाते हुए बताया कि हणूतसिंह भाईसा की पलटन के जवान उनके ऑर्डर्स/वचनों पर सांस छोड़ते थे, सन् 1971 के युद्ध में हणूतसिंह जी ने अपने जवानों को कहा कि, मेरे शूरवीरों, तुम्हें केसरिया की कसम है, अपने कदम पीछे मत लेना। युद्ध के दरमियान एक भारतीय टैंक पर पाक का ग्रेनेड पड़ गया और टैंक जलने लगा तो उनके अफसर ने टैंक अधिकारी 'अरुण क्षेत्रपाल' को पीछे हटने के हुक्म दिया। तब जांबाज बोला, मेरे जनरल का आर्डर है, मुझे केसरिया की सौगन है, मुझे मरने की कोई परवाह नहीं लेकिन मैं पैर पीछे कभी नही लूँगा। आज्ञाकारी अफसर दुश्मन की टैंक तबाह कर शहीद हो गया, बाद में उन्हें परमवीर चक्र से गौरवान्वित किया गया।

वाकई हणूतसिंह जी माँ भारती की निष्काम सेवा करने वाले महावीर हनुमान थे, कर्तव्य पालन में वाहवाही, झूठा तामझाम, खुशामद, राजनीतिक तमाशा आदि उस वीर को कभी फौजी की मर्यादा से डिगा नहीं सके। जब 1971 में जीत पर उन्हें महावीर चक्र देने का ऐलान हुआ तब उन्होंने इसे लेने से मना करते हुए कहा — What I am being rewarded for? I haven't done any beneficence of anybody but I've only followed and fulfilled my duty for my motherland. (मुझे किस बात का पुरस्कार दिया जा रहा है? मैंने किसी का उपकार नहीं किया, बल्कि मैंने तो केवल अपनी मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का पालन और निर्वहन किया है।) जनरल साहब के साथियों ने अर्ज की कि आपके इस निर्णय से महावीर चक्र की परंपरा टूट जायग। आखिरकार, उन्होंने ले तो लिया लेकिन जलसों में कभी भी अपनी छाती पर नहीं लगाया।

हणूतसिंह जी के भाईसाहब नाहरसिंह जी ने एक फौज के नियम कायदे अनुसार दबंगाई का एक किस्सा सुनाया, कि हणूतसिंह जी 1981 के आसपास सिक्किम में तैनात थे। उस समय उन्हें सरकार का एक आर्डर मिला कि वहां के राज्यपाल होमी एच.जे. तलियार हवाई अड्डे पर आ रहे हैं जिनकी फौज से मेहमानदारी करवानी है।

जनरल हणूतसिंह जी ने उस आदेश का यह प्रत्युतर दिया— It isn't the duty of military. This arrangement should be assured by local administration. A governer is a political post whose public hospitality is beyond the scope of military. Not only me even none of my men would go to the airport station area.
(यह सेना का काम नहीं है। यह व्यवस्था स्थानीय प्रशासन द्वारा सुनिश्चित की जानी चाहिए। राज्यपाल एक राजनीतिक पद है जिसका सार्वजनिक आतिथ्य सेना के दायरे से बाहर है। मैं ही नहीं, मेरा कोई भी आदमी एयरपोर्ट स्टेशन क्षेत्र में नहीं जाएगा।) और हवाई अड्डे पर फौज की सारी व्यवस्थाएं वापस ले ली गयी, इस तरह मजबूत हणूतसिंह जी ने सेना के प्रोटोकॉल को राजनीति की भेंट नहीं चढ़ने दिया।

जनरल हणूतसिंह जी के भांजे और उनकी आध्यात्मिकता को अंगीकार करने वाले साधक श्री नृपेन्द्रकरणसिंह कहते हैं कि, विशाल आध्यात्मिक कुटुंब के सदस्य श्री हणूतसिंह जी ने भरतखंड के महान ऋषि मुनियों के चरित्र की पुस्तकों से सार निकाला कि मनुष्य जीवन का सिर्फ एक लक्ष्य है - ईश्वर प्राप्ति। उम्र के अंतिम दिनों में उनका मिलन स्वयंभू (ईश्वर) से होने लगा था। वरीया मठ के नारायण भारती जी कहते है, कि बहादुरी, त्याग, ब्रह्मचर्य और अध्यात्म के सशक्त स्तंभ और संत समाज के आदर्श श्री हणूतसिंह जी भारत के रत्न थे। जो ध्यान और समाधि अवस्था में ही संसार से रवाना हो गए।

हणूतसिंह जी की गिनती आला दर्जे के फौजी अधिकारियों में होती हैं और उनके ऊंचे विचार आने वाली अफसर पीढ़ी के लिए अच्छी सीख देते हैं। औपचारिक राज सेवा से रिटायर होने के बाद आपश्री देहरादून गुरु आश्रम में साधना रत रहे और 11 अप्रैल 2015 को पूजा में बैठे बैठे ही ब्रह्मलीन हो गये। हणूतसिंह जी के पुश्तैनी फार्म हाउस जसोल में अभी कुछ पहले 17वीं पूना हॉर्स रेजिमेंट कमांडेंट बालूसिंह सिसोदिया की अगुवाई में हिन्द सेना ने इस जगह शानदार जलसा रखा और वीर योद्धा की याद में T-52 टैंक की स्थापना की।

ऐसे सिद्ध योगी वीर की गौरवगाथा भारत सरकार की स्कूलों, कोलेजों, आदि में पाठ्यक्रम में शामिल करनी चाहिए। (राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मंडल जयुपर से प्रकाशित एक पुस्तक(कक्षा 9th) में श्री हणूतसिंह जी की गौरवगाथा का वर्णन हुआ है)

धन्य हो वीर योद्धा हणूतसिंह जी जिन्होंने माँ भारती की सेवा के लिए सांसारिक भोग विलास को ठोकर मार मारवाड़ का नाम पूरे संसार में ऊंचा किया।

संस्मरण

# "जब पहली बार ऊँट पर बैठा"

गोविन्द सुवालका
(अध्यापक)
भीलवाडा, राजस्थान

जैसलमेर की धरती पर मेरा पहला कदम किसी स्वप्न की देहरी पर पाँव रखने जैसा था। दूर-दूर तक फैली रेत, गरम हवा की सरसराहट और चटक रंगों में लिपटी ज़िन्दगी... सब कुछ मेरे जैसे एक शहर में पले-ढ़ले इंसान के लिए एक अनदेखा, अनसुना संसार था। पर उस दिन की बात ही कुछ और थी। जोधपुर से जैसलमेर की ओर हम बढ़ रहे थे, और वहीं एक छोटे से गाँव — सम — में पहली बार मुझे ऊँट पर बैठने का अवसर मिला। मैंने सुना तो बहुत था — "ऊँट रेगिस्तान का जहाज़ है", लेकिन कभी कल्पना नहीं की थी कि उस पर बैठना मेरे जीवन के सबसे यादगार अनुभवों में से एक बन जाएगा।

जब मैंने पहली बार ऊँट को पास से देखा, तो थोड़ी झिझक हुई। उसकी ऊँचाई किसी छोटे खंभे जैसी थी, और उसकी बड़ी-बड़ी पलकों वाली आँखें जैसे मुझसे कुछ पूछ रही थीं। उसका नाम था "राजा" — और वह वाकई किसी राजसी ठाट से कम नहीं लग रहा था। उसके गले में छोटी-छोटी घंटियाँ बंधी थीं, जिनकी आवाज़ रेगिस्तान की नीरवता को संगीतमय बना रही थी। उसकी पीठ पर रंगीन गद्दी और कढ़ाई वाला कपड़ा बिछा था, जो मेरे जैसे पर्यटक को आमंत्रण दे रहा था — "आओ, बैठो, और महसूस करो मरुस्थल को मेरी पीठ पर।"

ऊँटवाले ने मुस्कराकर मुझे संकेत किया — "साहब, आराम से बैठना" मैं ऊँट पर चढ़कर बैठ गया। मगर असली नज़ारा तो तब शुरू हुआ, जब ऊँट उठने लगा। पहले उसने अपने पिछले पैर उठाए। मैं अचानक नीचे की ओर झुक गया — ऐसा लगा जैसे मैं स्लाइड से उतरने लगा हूँ। फिर अगले पैर उठे और मैं हवा में! ऊँट पर संतुलन बनाना एक कला है, और मैं उस कला में नितांत नया था। मेरी पकड़ ऊँट की पीठ पर और कस गई। ऊँट की चाल बिलकुल अलग थी — धीरे, हिचकोलेदार और एक अजीब लय में। शुरुआत में मुझे ऐसा लगा कि मैं किसी नाव पर बैठा हूँ जो रेगिस्तान की रेत की लहरों पर तैर रही है। उसकी चाल में एक सुकून भी था और एक रहस्य भी। रेत में उसके पाँव बिना धँसे, किसी अनुभवी बंजारे की तरह आगे बढ़ते रहे।

सड़क नहीं थी, दिशा कोई नहीं थी, बस सूरज की ओर बढ़ता एक ऊँचा, विशाल प्राणी और उसके ऊपर बैठा मैं — जैसे कोई कहानी का पात्र, जो अपने ही साहसिक अध्याय में जी रहा हो। ऊँट की ऊँचाई से मुझे दूर-दूर तक सब कुछ साफ़ दिखाई देता था — छोटी-छोटी झोपड़ियाँ, कुछ दौड़ते हुए बच्चे, एक चरवाहा जिसकी बकरी रेगिस्तान में घास खोज रही थी, और दूर कहीं कुछ और ऊँट — शायद अपने ही किसी मुसाफिर को ढोते हुए। रेगिस्तान के इस नीरस से दिखने वाले संसार में जीवन कितनी चुपचाप बहता है — यह मुझे उसी ऊँट की पीठ पर बैठकर समझ आया।

मेरे साथ एक स्थानीय ऊँटवाला था — नाम था भूराराम। वह पगड़ी बाँधे, मुस्कराता हुआ, हँसी-मजाक करता चलता रहा। भूराराम ने बताया कि ऊँट कैसे पानी के बिना कई दिन रह सकता है, कैसे वह रास्ता नहीं भूलता और कैसे वह अपने मालिक की आवाज़ पहचानता है।

जब ऊँट किसी छोटे टीले पर चढ़ता या उतरता, तो मेरे हाथ और कस जाते। कभी-कभी लगता कि मैं गिर जाऊँगा — मगर वह पूरी समझदारी से अपने हर कदम को सोच-समझकर रखता। उसकी साँसों की आवाज़, उसकी पीठ की गर्माहट, और उसके शरीर की हल्की गंध — सब कुछ एक अनुभव बनकर मेरी चेतना में बस गया। शाम हुई, और सूरज धीरे-धीरे रेत के समंदर में डूबने लगा। वह दृश्य... शब्दों से परे था। रेत पर लंबी होती ऊँट की परछाई और लाल-नारंगी आसमान — वह मेरे जीवन की सबसे सुंदर पेंटिंग थी। मैंने उस पल को साँसों में समेटा — मोबाइल से तस्वीरें लीं, लेकिन मैं जानता था कि कैमरा कभी वह महसूस नहीं कर सकता जो मैंने उस ऊँचाई से महसूस किया था। जैसे ही यात्रा खत्म हुई, और ऊँट ने फिर से अपने पैर मोड़कर मुझे उतारा — एक अजीब सा खालीपन हुआ। मैं ऊँट की पीठ से उतरा तो ज़मीन पर था, लेकिन मन अब भी किसी रेत की लहर पर तैर रहा था। भूराराम ने ऊँट के गले से घंटी को बजाया और कहा — “कभी वापस आना साहब।” मैंने मुस्कराकर सिर हिलाया, और उस ऊँट के माथे को हल्के से छुआ — जैसे किसी पुराने दोस्त को विदा देता है। अब जब भी मैं किसी रेगिस्तान की तस्वीर देखता हूँ, मेरी नज़र सबसे पहले ऊँट को ढूँढती है — और मन में वही पहली बार की गई ऊँट की सवारी की यादें ताजा होती है।

# उदयपुर का सफ़र

## हसीन वादियां और ऐतिहासिक धरोहर

पधारो म्हारे देश

--लेख--

ठाकराराम जाखड़
बाड़मेर, राजस्थान

जब बात हिंदुस्तान के अद्वितीय शहरों की हो, तो उदयपुर का ज़िक्र न करना मुमकिन नहीं। राजस्थान की गोद में बसा यह शहर अपने हसीन वादियां, पारंपरिक रीति रिवाज और मोहब्बत भरे माहौल के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। इसे न सिर्फ "झीलों की नगरी" कहा जाता है, बल्कि यह अपनी शानो-शौकत, वास्तुकला और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए भी जानी जाती है।

आइए उदयपुर के प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों का विस्तार से परिचय लेते है:-

## 1. पिछोला झील (Lake Pichola)

पिछोला झील उदयपुर का सबसे प्रसिद्ध और पुराना जलाशय है। यह झील 1362 में एक बंजारे द्वारा बनाई गई थी और बाद में महाराणा उदय सिंह ने इसे विस्तारित किया। यह झील राजस्थान की स्थापत्य कला और प्राकृतिक सुंदरता का अद्भुत संगम है।

मुख्य आकर्षण:

- झील के बीच स्थित "जग निवास" (ताज लेक पैलेस), जो अब एक लग्जरी होटल है।
- "जग मंदिर," जिसे पानी पर तैरते हुए संगमरमर के महल के रूप में जाना जाता है।
- झील किनारे से सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भुत दृश्य।
- नाव की सवारी।

## 2. सिटी पैलेस (City Palace)

उदयपुर का सिटी पैलेस भारत के सबसे भव्य महलों में से एक है। यह पिछोला झील के किनारे बना हुआ है और इसका निर्माण 16वीं शताब्दी में महाराणा उदय सिंह ने शुरू कराया था।

मुख्य आकर्षण:

- महल के भीतर संग्रहालय, जिसमें राजपूतों की धरोहरों और वस्त्रों का संग्रह है।
- झरोखों और खिड़कियों से झील और शहर का मनोरम दृश्य।
- "क्रिस्टल गैलरी," जिसमें दुर्लभ क्रिस्टल वस्तुएं और फर्नीचर हैं।
- महल की अद्भुत वास्तुकला, जिसमें राजपूत और मुग़ल शैली का मेल है।

## 3. फतेह सागर झील (Fateh Sagar Lake)

यह पिछोला झील के उत्तर-पश्चिम में स्थित एक कृत्रिम झील है। इसे 1678 में महाराणा फतेह सिंह ने बनवाया था।

मुख्य आकर्षण:

- झील के बीच में स्थित "नीमरू द्वीप"।
- झील के किनारे "मोटर बोटिंग" और "कैफे"।
- पास में स्थित "महाराणा प्रताप स्मारक।

## 4. सज्जनगढ़ पैलेस (Monsoon Palace)

अरावली पहाड़ियों पर स्थित सज्जनगढ़ पैलेस, जिसे "मॉनसून पैलेस" भी कहा जाता है, महाराणा सज्जन सिंह द्वारा बनाया गया था।

मुख्य आकर्षण:

- महल से पूरे उदयपुर और आसपास की झीलों और पहाड़ियों का दृश्य।
- सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भुत अनुभव।
- मानसून के मौसम में बादलों के बीच घूमते इस महल का आनंद।

## 5. सहेलियों की बाड़ी (Saheliyon Ki Bari)

यह उद्यान महाराणा संग्राम सिंह ने अपनी रानी और उनकी सहेलियों के लिए बनवाया था। यह उद्यान अपनी हरियाली, फव्वारों और फूलों के लिए प्रसिद्ध है।

मुख्य आकर्षण:

- संगमरमर के मंडप और फव्वारे।
- कमल के फूलों से सजे तालाब।
- एकांत और सुकून भरा माहौल।

## 6. जग मंदिर (Jag Mandir)

पिछोला झील के बीच स्थित यह महल, शाही मेहमानों के स्वागत के लिए बनाया गया था। इसे "झील का गहना" भी कहा जाता है।

मुख्य आकर्षण:

- सफेद संगमरमर से निर्मित संरचना।
- फूलों और बगीचों से सुसज्जित वातावरण।
- महल के खुले मंडप से झील का दृश्य।

## 7. शिल्पग्राम

शिल्पग्राम उदयपुर के पास स्थित एक सांस्कृतिक ग्राम है, जहाँ राजस्थान की लोककला, हस्तशिल्प और पारंपरिक जीवनशैली का प्रदर्शन होता है।

मुख्य आकर्षण:

- हस्तनिर्मित वस्त्र, गहने और शिल्पकला।
- पारंपरिक राजस्थानी नृत्य और संगीत।
- हर साल आयोजित "शिल्पग्राम मेला।"

## 8. बगोर की हवेली (Bagore Ki Haveli)

पिछोला झील के किनारे स्थित यह हवेली 18वीं शताब्दी में बनाई गई थी। यह राजस्थानी संस्कृति और इतिहास की झलक प्रस्तुत करती है।

मुख्य आकर्षण:

- हवेली के कमरों में पारंपरिक वस्त्र, आभूषण और फर्नीचर।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम, जैसे "धरोहर डांस शो।"
- झील के किनारे का दृश्य।

## 9. कुम्भलगढ़ किला (Kumbhalgarh Fort)

उदयपुर से लगभग 84 किलोमीटर दूर स्थित यह किला अपनी विशाल दीवारों और स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। इसे महाराणा कुम्भा ने बनवाया था।

मुख्य आकर्षण:

- किले की 36 किलोमीटर लंबी दीवार, जो चीन की दीवार के बाद दूसरी सबसे बड़ी दीवार मानी जाती है।
- किले के भीतर बने मंदिर और महल।
- शानदार नाइट शो।

## 10. हल्दीघाटी

यह स्थान महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच हुए ऐतिहासिक युद्ध का गवाह है। यह उदयपुर से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित है।

मुख्य आकर्षण:

- युद्ध संग्रहालय।
- महाराणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक की गाथा।
- राजपूत योद्धाओं की वीरता के किस्से।

# कुम्भलगढ़ किले की कुछ झलकियाँ

# हल्दीघाटी की कुछ चुनिन्दा झलकियाँ

कृपया किसी वस्तु
के हाथ नहीं लगावें
Please
don't touch any item

# आप सभी का हार्दिक आभार